31/7/19

पाठ-1 (व्याकरण)

अलंकार

- अलंकार – काव्य में सौंदर्य बढ़ाने वाले को, अलंकार कहते है। अलंकार के दो भेद होते है-

1- शब्दालंकार – काव्य में जब शब्द के माध्यम से सौंदर्य कि अनुभूति हो, वह शब्दालंकार होता है।
जैसे- बरसात बारिश बून्द

अर्थालंकार – जहाँ अर्थ के माध्यम से काव्य मे सौन्दर्य कि अनुभूति हो, वहाँ अर्थालंकार होता है।
जैसे – (i) जगत जगत की भूरव प्यासी
नील कमल से सुन्दर नयन

1.* शब्दालंकार के अन्तर्गत निम्नलिखित अलंकार आते है-

1. अनुप्रास अलंकार – जहाँ किसी भी व्यंजन वर्ण कि बार-बार आवृत्ति हो, वहाँ अनुप्रास अलंकार होता है।
जैसे– तरनि तनुजा तट तमाल तरुवर बहुछाएँ
इसमें त वर्ण कि आवृत्ति हुई है अतः यह अनुप्रास अलंकार है।

2. यमक अलंकार – जिस काव्य में एक शब्द बार-बार आए लेकिन उसके अर्थ में भिन्नता हो, वहाँ यमक अलंकार होता है।
जैसे– काली घटा का घमन्ड घटा।
यहाँ इस काव्य में घटा शब्द दो बार आया है लेकिन उसके अर्थ में भिन्नता है। एक घटा शब्द का अर्थ है बादल और दूसरे घटा शब्द का अर्थ है कम होना।

3. श्लेष अलंकार – काव्य में जहाँ एक शब्द के एक से अधिक अर्थ निकले वहाँ श्लेष अलंकार होता है।
जैसे – पानी गए न उबरे मोती मानुष चूर
इसमें पानी को मानुष्य की मर्यादा के लिए प्रयोग किया गया है और पानी को मोती के चमक के लिए प्रयोग किया गया है और पानी को चूने के पानी के लिए प्रयोग किया गया है।

2.* अर्थालंकार के अन्तर्गत निम्नलिखित अलंकार आते है-

उपमा अलंकार – जब किसी वस्तु या व्यक्ति कि विशेषता दर्शन के लिए किसी अन्य वस्तु या व्यक्ति से कि जाती है वहाँ उपमा अलंकार होता है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

जैसे – नीलकमल से सुन्दर नयन

* उपमा के चार भेद होते है –

i- **उपमेय** – जिस व्यक्ति या वस्तु कि समानता की जाती है उसे उपमेय कहते है। जैसे- नीलकमल

ii- **उपमा** – जिस वस्तु या व्यक्ति से उपमेय कि समानता की जाती है उसे उपमा कहते है। जैसे- नयन

iii- **समान धर्म** – उपमेय और उपमा में जो गुण समान पाया जाता है उसे समान धर्म कहते है। जैसे- सुन्दर

iv- **वाचक शब्द** – जिस शब्द विशेष से समानता या उपमा का बोध होता है, उसे वाचक शब्द कहते है।
जैसे – से

2.* अर्थालंकार के पाँच (5) भेद होते है

1. **रूपक अलंकार** – जहाँ गुण कि अत्यन्त सम्मानता दर्शायी जाती है अर्थात उपमेय और उपमा को एक कर दिया जाता है, वहाँ रूपक अलंकार होता है जैसे- [illegible]मल बन्दौं हरि

2. **उत्प्रेक्षा अलंकार** – जहाँ उपमेय और उपमा कि समानता के कारण उपमेय में उपमा कि सम्भावना कि जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
यदि मनुमानव जनु- जानव जानो आदि शब्द कविता में आये वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।
जैसे- पाहुन ज्यो आये हो गाँव में शहर के

3. **मानवीकरण अलंकार** – जहाँ प्रकृति के चीज़ों को मानव रूप में रचना किया जाये वहाँ मानवीकरण अलंकार होता है।
जैसे – सन्ध्या सुन्दरीय परी सी धीरे - धीरे

4. **अतिशयोक्ति अलंकार** – जहाँ किसी गुण या स्थिति का बढ़ा - चढ़ाकर वर्णन किया जाए, वहाँ अतिशयोक्ति अलंकार होते है।
जैसे – हनुमान की पूँछ में,
लगन न पायी आग,
लंका सिगरी जल गयी,
गये निशाचर भाग

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

4/8/19

पाठ - 2

समास

- **समास** – दो या दो से अधिक शब्दो के मेल से नए शब्द बनाने की क्रिया को समास कहते है। जैसे- गंगाजल

समस्तपद – सन्क्षेप में किए गए पदों को समस्तपद कहा जाता है। और जब उन्हे अलग - अलग तो उसे समास विग्रह कहते है।
जैसे- गंगा - पूर्वपद, जल - उत्तरपद है।

* समास छः प्रकार के होते है –

1. **तत्पुरुष समास** – इसमें उत्तर पद प्रधान होता है और पूर्व पद गौण होता है। इसके अतिरिक्त पूर्व पद विशेषण और उत्तर पद विशेष्य होता है। इस समास में बीच कि विभक्तियों का लोप हो जाता है।
जैसे – दही बड़ा का विग्रह करने पर दही में डूबा हुआ बड़ा में तीन पदों का लोप हो गया है

* तत्पुरुष समास के निम्नलिखित भेद है –

i. **कर्मतत्पुरुष** – जहाँ पूर्व पद में कर्म कारक कि विभक्ति का लोप हो, वहाँ कर्मतत्पुरुष होता है।
जैसे - स्वर्गप्राप्त - स्वर्ग को प्राप्त यहाँ कर्म (को) कारक का लोप हुआ है।

ii. **करणतत्पुरुष** – जहाँ पूर्वपद में कारण कारक कि विभक्ति का लोप हो, वहाँ करणतत्पुरुष होता है।
जैसे – अकाल पीड़ित सका यदि हम विग्रह करेंगे तो अकाल से पीड़ित होगा अर्थात इसमें से, के द्वारा तृतीया विभक्ति का लोप हुआ है।

iii. **सम्प्रदान तत्पुरुष** – जहाँ समास के पूर्वपद में सम्प्रदान विभक्ति के लिए का लोप होता है, वहाँ सम्प्रदान तत्पुरुष समास होता है।
जैसे – गौशाला इसको यदि हम विग्रह करेंगे तो गौ के लिए शाला होगा। इसमें चतुर्थी विभक्ति के लिए का लोप हुआ है।

iv. **अपादान तत्पुरुष** – जहाँ समास के पूर्वपद में अपादान कि विभक्ति से अलग करने का भाव हो, वहाँ अपादान तत्पुरुष होता है।
जैसे – धनहीन - इसको विग्रह करेंगे तो

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

PAGE:
DATE: / /

धन से हीन होगा। यहाँ से अलग होने अर्थात् अपादान तत्पुरुष कि विभक्ति का लोप हुआ है।

v) **सम्बन्ध तत्पुरुष** – जहाँ समास के पूर्वपद में सम्बन्ध तत्पुरुष कि विभक्ति अर्थात् का, के, की, का वहाँ सम्बन्ध तत्पुरुष होता है।
जैसे – देशरक्षा, प्रेमसागर, आज्ञानुसार
इसमें विग्रह करने पर कि, का और के विभक्ति चिह्न का लोप हुआ है अतः यहाँ सम्बन्ध तत्पुरुष होगा।

vi) **अधिकरण तत्पुरुष** – जहाँ अधिकरण कारण कि विभक्ति अर्थात् में, पर का लोप होता है, वहाँ अधिकरण तत्पुरुष होता है।
जैसे – आपबीती – आप पर बीती, ग्रामवास – ग्राम में वास इसमें अधिकरण कारक कि विभक्ति में, पर का लोप हुआ है अतः यहाँ अधिकरण तत्पुरुष होगा।

2. **कर्मधारय समास** – इसमें पहला पद विशेषण तथा दूसरा पद विशेष्य होता है अर्थात अथवा एक पद उपमान और दूसरा पद उपमेय होता है।
जैसे – नीलगगन, महादेव, महाराजा आदि

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

PAGE:
DATE: / /

3. **द्विगु समास** – जहाँ समस्तपद के पूर्वपद में संख्यावाचक विशेषण हो, उसे द्विगु समास कहते है।
जैसे – तिरंगा, दोपहर, पंचवटी आदि

4. **बहुव्रीहि समास** – जहाँ पहला पद और दूसरा पद मिलकर किसी तीसरे शब्द की ओर संकेत करते है, वहाँ बहुव्रीहि समास होता है। जैसे – मुरलीधर – मुरली धारण करने वाला (कृष्ण जी), लम्बोदर – लम्बा उदर है जिसका (गणेश जी)

5. **द्वंद्व समास** – जिस समस्तपद में दोनो पद समान हो वहाँ द्वंद्व समास होता है। इसमें दोनो पदो को मिलते समय मध्य मे स्थित योजक का लोप हो जाता है।
जैसे – भाई और बहन का समस्तपद होगा भाई-बहन यहाँ दोनो पद समान है। समास करते समय मध्य स्थित और का लोप हो गया है।

6. **अव्ययीभाव समास** – जिस समास में पहला पद अव्यय हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते है। इसका पहला पद प्रधान और दूसरा पद गौण होता है। इस प्रक्रिया से बना समस्तपद भी अव्यय की भाँति कार्य करता है।
जैसे – प्रति + दिन = प्रतिदिन। यहाँ प्रति अव्यय है।

7/8/19

पाठ-3

प्र०1 उपसर्ग किसे कहते है ? उदाहरण देकर समझाइए।

उ०- उपसर्ग- उपसर्ग मे शब्दांश है जो किसी शब्द के पूर्व में लगाकर उस शब्द का अर्थ बदल देते है या उनमें नई विशेषता उत्पन्न कर देते है। जैसे- कु + पुत्र = कुपुत्र

उपसर्ग कई प्रकार के होते है

संस्कृत के उपसर्ग
हिंदी के उपसर्ग
उर्दु और फारसी के उपसर्ग

संस्कृत के उपसर्ग- संस्कृत के उपसर्ग निम्नलिखित प्रकार के होते है-

जैसे - अधि अधिकार
अति अतिरिक्त
अनु अनुप्रास
अप अपमान
अभि अभिमान
... ...काश
... ...न्न

नि निम्न
प्रति प्रतिदिन
वि विष
परि परिक्षा
परा पराजय
सम् सम्मान
सु सुगम
अन्त: अन्तर्मन
यथा यथाशक्ति

हिंदी के उपसर्ग -

अध आधार
अ अन्न
चौ चौराहा
उन उन्नचास
दु दुष्कर्म
नि निन्दा
पर परमात्मा
बिन बिनबात
घर घरौंदर

उर्दु और फारसी के उपसर्ग-

ऐन ऐनवक्त
कम कमजोर
ग गन्दगी
दर दरबार

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

न नज़र

ब बदनाम

बे बेरहम

ला लाजवाब

सर सरकार

हम हमदर्द

अम अमरूद

खुश खुशबू

बद बदमाश

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera